|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  |  |  |  |  | 2д |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  | у |  | 4н |  |  |  |
|  |  |  |  |  | х |  | е |  |  |  |
|  |  |  |  |  | о |  | м |  |  |  |
|  |  | 3п |  |  | в |  | в |  |  |  |
| 1з | н | а | м | е | н | н | ы | й |  |  |
|  |  | р |  |  | а |  |  |  |  |  |
|  |  | т |  |  | я |  |  |  |  |  |
|  |  | е |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 5о | с | м | о | г | л | а | с | и | е |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

|  |  |
| --- | --- |
| По горизонтали: | По вертикали: |
| 1. Основной вид древнерусского церковного пения.  5. «Восемь голосов». | 2. Произведения на тексты религиозного жанра.  3. новый стиль хорового многоголосия, которым возник в середине 17 века  4.по-русски – знаки, знамена, крюки; отсюда – знаменный распев…(форма записи осмогласия) |